आज की मुरली का सार ---

बाबा ने कहा, बच्चों का पुरुषार्थ ऐसा हो, अन्त समय जो स्त्री सिमरे....यानी मेरा पुरुषार्थ ऐसा हो जो अन्त समय मुझे एक बाप ही याद आये, तभी में ये पुराना शरीर छोड़कर बाबा की गोंद में चला जाउगा.

मनुष्य आत्मा जब अपना शरीर छोड़ते हे, तब उसे जिसे ज्यादा मोह हे वही याद आता हे. किसी को अन्त समय कुछ खाने का या पहनने का या किसी को मिलने की तड़प रहती हे, तो वही याद आता हे. मोह की रग बहुत सूक्ष्म रुप से हर मनुष्य में रहती हे, चाहे ज्ञानी हो या अज्ञानी.

ज्ञान से मोह की रग नहीं तोड सकते. मोह की रग तोड़ने के लिए बड़ी सच्चाई-सफाई से "मेरा तो एक बाबा दूसरा ना कोई" धारण किया हो. बाबा को बड़े प्यार से दिल में बैठाया हो. हर बात में बाबा पहले याद आता हो. जिसके दिलो-दिमाग पर एक बाबा ही छाया हो. बाबा से हर सम्बन्ध का अनुभव किया हो. मान-अपमान से परे, देह भान से परे, हर परिस्थिति में अचल-अडोल रहता हो ओर सदा खुश रहता हो. वही आत्मा ने सच्चे दिल से बाबा को अपना बनाया हे. जिसके लिए गायन हे बाबा ही मेरा संसार हैं.

बाबा को दिल में बैठा कर ये ड्रिल बार-बार करें, जिसे बाप ओर वर्सा याद आता रहे.

बाबा के पास जाना हे, फिर श्रिक्रिष्ना के साथ आना हे.

ॐ शांति.